

डॉ. ब्रूस वाल्टके, भजन, व्याख्यान 6

© 2024 ब्रूस वाल्टके और टेड हिल्लेब्रांट

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या छह है, फॉर्म क्रिटिकल अप्रोच और हाइमन मोटिफ्स।

प्रार्थना: हम आपसे शक्ति माँगते हैं। हमारे हृदयों को अपनी ओर झुकाओ। आध्यात्मिक शब्दों को आध्यात्मिक सत्य के साथ संयोजित करने में हमारी सहायता करें। तुम हमारे साथ रहने का वादा करो. हमारी पर्याप्तता निश्चित रूप से हमारी नहीं है। मसीह के नाम पर हमारी पर्याप्तता आपके लिए है। तथास्तु।

इस पाठ्यक्रम में, हम भजनों के विभिन्न दृष्टिकोणों को देख रहे हैं। हमें यह समझने में मदद करने के लिए कि हमारा ध्यान मुख्य रूप से भजनों के धर्मशास्त्र या भजनों के आध्यात्मिक जीवन पर नहीं है, बल्कि इसलिए ताकि हम स्वयं भजनों को समझ सकें और स्वयं भजनों के लिए उपयुक्त प्रामाणिक तरीके से उनकी व्याख्या कर सकें। बेशक, हम भजनों के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण आजमा रहे हैं।

इनमें से एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण है जिसे हमने कल देखा था। हमारा तरीका चीजों का व्यापक दृष्टिकोण देना और फिर उसे एक या दो भजनों तक सीमित करना है। मेरे निर्णय में, जब हम वास्तव में पाठ में होते हैं तो वह सबसे अच्छा हिस्सा होता है।

इसलिए, हमने ऐतिहासिक दृष्टिकोण को देखा और हमने देखा कि विषय मूल रूप से राजा है। मैं सोचता हूँ कि आप भजनों के बारे में मूल रूप से एक शाही भजन पुस्तक के रूप में सोच सकते हैं, जिसमें भगवान के सभी लोग मंदिर में राजा के पास एकत्र हुए थे। वह लोगों और स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है।

पुराना नियम नये का एक रूपक है। यह ठोस है, भौतिक है। तो, सांसारिक मंदिर आध्यात्मिक मंदिर का एक चित्र है।

पृथ्वी के मंदिर में न्याय कक्ष और न्याय कक्ष के साथ अपने भगवान के दाहिने हाथ पर राजा की एक तस्वीर है। इसलिए, हम पिता के दाहिनी ओर मसीह को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। वह दाहिनी ओर का न्यायाधीश है।

हम रूपक से आध्यात्मिक की ओर परिवर्तन करते हैं और हमारे पास रूपक है ताकि हम आध्यात्मिक को समझ सकें। तो, पुराना नियम एक चित्र पुस्तक की तरह है। तो, हमने राजा को देखा और वह महान राजा की तस्वीर है।

इसराइल, जो हमारे हैं, वे हमारे पिता हैं। 1 कुरिन्थियों 10 उन्हें हमारे पिता के रूप में बोलता है। इब्राहीम को हमारा पिता कहा जाता है।

गलातियों 3.29, तुम इब्राहीम के वंश हो। आज हमारी पहचान ईश्वर के लोगों के रूप में की जाती है, वह चर्च है। और इसलिए, हमने इसे व्यापक रूप से देखा, और फिर हमने भजन 4 को और अधिक संकीर्णता से देखा। फिर हमने इसे साहित्यिक दृष्टिकोण से और अधिक देखा।

हमने सामान्य तौर पर कविता से निपटा। आप कविता कैसे पढ़ते हैं? आप भजन के प्रति किस प्रकार दृष्टिकोण रखते हैं? क्योंकि यह सब कविता में है। आप कविता कैसे पढ़ते हैं? हमने देखा कि सभी कविताओं में समानता का एक निश्चित रूप होता है।

आप कुछ कहते हैं, लेकिन वह नहीं है, और फिर आप उसे दोबारा कहते हैं, लेकिन यह सिर्फ एक पुनर्कथन नहीं है। यह एक संबंधित बयान है और यह काफी अलग है। जैसे ही आप पंक्तियाँ पढ़ते हैं और देखते हैं कि वे किस प्रकार संबंधित हैं, आप भी दो प्रश्न पूछ रहे हैं।

वे कैसे संबंधित हैं? और वे कैसे भिन्न हैं? और आप इसे बहुत तेज़ चाकू से काटते हैं और आप इसे वैसे ही पढ़ना शुरू करते हैं जैसा कवि ने सोचा था। हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह कवि के दिमाग में वापस प्रवेश करना है। वह कैसे सोच रहा है? इसलिए, हम अपनी व्याख्या में प्रामाणिक हो सकते हैं।

इसलिए हम इस तरह के काम में लगे हैं! प्रतिभाशाली कवि, डेविड, जो अच्छी तरह से बोलता था, क्योंकि वह उस दुनिया के साहित्य से अवगत था और कविता कैसे काम करती है। अब हम दूसरे दृष्टिकोण पर आते हैं, जिसे फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण कहा जाता है।

फिर अगले में, जिसे मैंने मूल रूप से दो व्याख्यानों के रूप में आवंटित किया था, हम इसे एक दृष्टिकोण के रूप में बहुत व्यापक रूप से देखने जा रहे हैं। फिर हम इसे फिर से संकीर्ण करेंगे और हम एक विशेष स्तोत्र को देखेंगे और इसे अधिक विस्तार से, अधिक परिष्कृत करेंगे। तो, इस तरह हम पाठ्यक्रम पर आगे बढ़ रहे हैं।

तो, हम आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर हैं और मैंने इसे पृष्ठ 50 पर दो भागों में विभाजित किया है। मुझे लगता है कि, यदि आप जानते हैं कि यह परिचय के माध्यम से, यह भाग एक है। फिर एक रूप, मूल रूप से स्तोत्र के पाँच अलग-अलग प्रकार हैं, या न्यूनतम पाँच रूप हैं।

हम उस पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, जो भजन, स्तुति स्तोत्र है। इस प्रकार के स्तोत्र में हमें प्रचुर मात्रा में धर्मशास्त्र मिलता है। हम स्वयं इज़राइल को इस बात की गवाही देते हुए सुन रहे हैं कि वे क्या विश्वास करते हैं या ईश्वर ने उनके दिलों में ईश्वर के बारे में क्या रखा है।

तो, भगवान के लिए उनके शब्द, एक स्तुति हमारे लिए भगवान का शब्द बन जाती है और उनके होठों के माध्यम से, अब मूसा के होठों के माध्यम से या भविष्यवक्ता के होठों के माध्यम से नहीं, बल्कि अब राजा और उसके लोगों के माध्यम से, हमें भगवान के बारे में सिखाया जा रहा है। यह रहस्योद्घाटन का एक अलग रूप है जो हमें भजनों में मिलता है। यह ईश्वर को देखने का एक और तरीका है।

ये स्तुति के भजन हैं और हम यही देखने जा रहे हैं। इसलिए, हमें इसे व्यापक रूप से देखना होगा। यहां बहुत सारी सामग्री है और सामग्री में डूब जाना आसान है।

यह इस कारण से एक बहुत ही कठिन व्याख्यान हो सकता है क्योंकि इसमें बहुत सारी सामग्री शामिल है, लेकिन मुझे लगता है कि भजन की पुस्तक का संपूर्ण अनुभव प्राप्त करने के लिए इसकी आवश्यकता है। यदि हम केवल कुछ स्तोत्रों तक ही सीमित रह जाएं तो हमें संपूर्ण पुस्तक का अहसास नहीं हो पाता। आप चीजों का संपूर्ण दृश्य नहीं देखते हैं।

इसलिए, हमें इसे पूरी तरह से देखने की जरूरत है। हमें इसे व्यक्तिगत रूप से और अधिक संकीर्णता से देखने की जरूरत है। तो, इस विशेष में, हम भजनों को एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखेंगे।

हम उन्हें इस आधार पर वर्गीकृत करने जा रहे हैं कि क्या वे भजन हैं या विलाप हैं या विश्वास या निर्देश के गीत हैं और विभिन्न प्रकार के भजन हैं। तो इस तरह हम इसे देखेंगे, उन्हें एक साथ समूहित करेंगे। इसलिए, परिचय के माध्यम से, मैं फॉर्म-आलोचना से पहले भजनों के अकादमिक दृष्टिकोण का एक सर्वेक्षण देता हूं।

फिर मुझे लगता है कि हम इसके बारे में बात करेंगे और परिचय के तौर पर अगला सर्वेक्षण क्या है? शैक्षणिक दृष्टिकोण का सर्वेक्षण. खैर, वह रोमन अंक है। फिर हम विशेष रूप से पृष्ठ 55 पर स्तुति के भजनों पर जा रहे हैं। इसलिए मेरे पास वास्तव में रोमन अंक ॥ नहीं था।

तो यह सबसे अच्छी बात नहीं है, लेकिन फिर भी, मेरे पास यही है। अकादमिक दृष्टिकोण के तहत, हम आलोचना बनाने से पहले शुरुआत करते हैं, हमारे पास पारंपरिक दृष्टिकोण है, जो कि आप सुपरस्क्रिप्ट पर निर्भर करते हैं और आप उन्हें डेविड और उससे पहले इज़राइल के इतिहास में बताते हैं। एक चीज़ जो हम उस दृष्टिकोण से करते हैं जो पारंपरिक नहीं थी, वह है राजा की अवधारणा पर ज़ोर देना।

साहित्य में यह सामान्य बात नहीं है। मुझे लगता है कि यह सही है, लेकिन हाल के साहित्य में इस पर अधिक ध्यान दिया गया है। तो यह एक पारंपरिक दृष्टिकोण है।

हमने उस बारे में बात की। उसके और फॉर्म-क्रिटिकल के बीच एक गैपिंग दृष्टिकोण है। इसे हम साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कह सकते हैं।

आप स्वयं से पूछ रहे होंगे कि शिक्षा जगत डेविडिक लेखकत्व को अस्वीकार क्यों करता है? क्या है तर्क? वे संशय में क्यों हैं? हमें यह समझने के लिए थोड़ी सी पृष्ठभूमि की आवश्यकता है कि अकादमिक क्षेत्र कहां है और अधिकांश सेमिनारियों को सुपरस्क्रिप्ट पर भरोसा न करने की शिक्षा क्यों दी जाती है। हमें साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर वापस जाने की जरूरत है। अब मैं पहले ही पूर्वधारणाओं और पूर्वधारणाओं के बारे में बात कर चुका हूँ, जैसा कि मैंने कहा, आपने कारण को रहस्योद्घाटन से ऊपर रखा है।

आप रहस्योद्घाटन पर भरोसा नहीं करते. आप इसके ऊपर अपने कारण पर भरोसा करते हैं। तर्क से, आप शुरुआत में बाइबल के बारे में संदेह से शुरुआत करते हैं।

आप दैवीय हस्तक्षेप में विश्वास नहीं करते. वैज्ञानिक पद्धति में वास्तव में चमत्कार या ईश्वर के हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं है। यह सिर्फ इतना है कि वैज्ञानिक पद्धति यह नहीं जानती कि इसे कैसे संभालना है।

यह वैज्ञानिक जांच का विषय नहीं है। तो कहीं भी, क्योंकि उनके पास एक ऐसा लेंस है जिससे आप आत्मा को नहीं देख सकते हैं, वे भगवान को नहीं देख सकते हैं और वे केवल भौतिक बनकर रह जाते हैं। यह अति सरलीकृत है, लेकिन मुझे लगता है कि इसका मतलब यही है।

वास्तविक संशयवाद पेंटाटेच से शुरू हुआ और जूलियस वेलहाउज़ेन नाम के एक जर्मन विद्वान के साथ चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। लगभग 1869, 1870 में, वह एक महान रचना लेकर आये जिसने अकादमिक जगत को हिलाकर रख दिया जिसे प्रोलेगोमेनन टू द पेंटाटेच कहा जाता है। अब पहले भी संदेह था या उससे पहले सबूत थे, कि पेंटाटेच में दस्तावेज़ शामिल थे और उन्होंने दस्तावेज़ों को कुछ साहित्यिक मानदंडों के आधार पर अलग कर दिया था।

इसीलिए मैं इसे साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कहता हूँ। उन्होंने साहित्य और साहित्यिक विश्लेषण के माध्यम से दस्तावेज़ों को अलग किया। तो, यह देखा गया कि कुछ मामलों में भगवान को यहोवा कहा जाता है, जो कि जर्मन के साथ, उनके पास वाई नहीं है, उनके पास जे है। इसलिए, आप यहोवा को जे के साथ लिखते हैं। इसलिए, उन्होंने साहित्यिक आलोचकों को अलग कर दिया।

उन्होंने उस दस्तावेज़ को अलग कर दिया जो जर्मन भाषा का था। हमारे क्षेत्र में यह एक प्रकार का मजाक है कि पहली सेमिटिक भाषा जर्मन है क्योंकि सारा वैज्ञानिक कार्य जर्मन में होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पास कुछ वैज्ञानिक दिमाग हैं।

तो, सब कुछ बहुत विश्लेषणात्मक और बहुत सटीक और वैज्ञानिक है। खैर, वैसे भी, तो यह एक जे दस्तावेज़ है। अन्य दस्तावेज़ भगवान के लिए उस नाम का उपयोग नहीं करते हैं।

वे परमेश्वर के लिए दूसरे नाम का उपयोग करते हैं, जो एलोहीम है। और उन्होंने साहित्यिक मानदंडों, शब्दावली के उपयोग और अन्य शब्दों के आधार पर ग्रंथों को अलग किया। उन्होंने पहचाना कि दो दस्तावेज़ थे और उन्होंने एक दस्तावेज़ को ई कहा क्योंकि इसमें एलोहिम का उपयोग किया गया था।

दूसरा दस्तावेज़ जिसमें एलोहिम का उपयोग किया गया था, उसकी सामग्री अधिकतर लेविटिकस की पुस्तक और पुरोहिती सामग्री से संबंधित थी। इसलिए, उन्होंने इसे पुरोहिती दस्तावेज़ कहा। तो अब आपके पास तीन दस्तावेज़ हैं।

आपके पास एक याहविस्टिक दस्तावेज़ है, आपके पास एक एलोहिस्टिक दस्तावेज़ है, और आपके पास एक पुरोहिती दस्तावेज़ है। तो, आपके पास एक J दस्तावेज़, एक E दस्तावेज़ और एक P दस्तावेज़ है। लेकिन एक और दस्तावेज़ है जो फिर से भिन्न है, और वह है व्यवस्थाविवरण।

यह एक अलग तरह की किताब थी जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, इसे डी दस्तावेज़ कहा जाता है। तो अब आपको वह मिल गया है जिसे जेईडीपी सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। सवाल यह था कि पहले कौन आया? यह रोचक है।

आप देख सकते हैं कि यह एक बहुत ही प्रशंसनीय सिद्धांत क्यों है। मेरे निर्णय में इसकी सराहना करने के लिए बहुत कुछ है। उदाहरण के लिए, जे दस्तावेज़ में, मनुष्य कब यहोवा का नाम पुकारना शुरू करते हैं? और जे दस्तावेज़ में, यह उत्पत्ति 4 से शुरू होता है, सेठ के जन्म के साथ और सेठ के पास एनोश था।

और जब एनोश का जन्म हुआ, तभी लोग यहोवा का नाम पुकारने लगे। तो जे दस्तावेज़ के अनुसार, यहोवा का नाम एनोश से शुरू हुआ और यह फिट बैठता है। तो फिर ई दस्तावेज़ में, और उन्होंने निर्गमन 3 को पहले ही अलग कर दिया था, मूसा ने पूछा है, आपका नाम क्या है? और ई दस्तावेज़ के अनुसार, यहोवा नाम तब प्रकट हुआ जब परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी पर मूसा को बुलाया।

तो, आपके पास ई दस्तावेज़ में भगवान यहोवा के नाम पर भगवान की एक अलग उत्पत्ति है। और पी दस्तावेज़ में, वह निर्गमन 6 है, भगवान मूसा से कहते हैं, अब से पहले, मुझे यहोवा के नाम से नहीं जाना जाता था। तो, आप इसके साथ क्या करते हैं? इब्राहीम को यहोवा के नाम पर बुलाया गया था।

और हमें जे दस्तावेज़ में बताया गया है कि तब लोगों ने यहोवा का नाम पुकारना शुरू कर दिया। ई दस्तावेज़ के अनुसार, मूसा को उसका नाम पूछना होगा। लेकिन अब निर्गमन 6 में, ऐसा लगता है जैसे वह अपना नाम नहीं जानता था।

मैंने खुद को उस नाम से नहीं जाना। तो वह P दस्तावेज़ है। मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि यह बहुत प्रशंसनीय है कि हमारे पास अलग-अलग दस्तावेज़ हैं जो हमें भगवान के नाम की अलग-अलग उत्पत्ति बताते हैं।

और वे एक दूसरे का खंडन करते हैं। और यही इस संपूर्ण दस्तावेजी परिकल्पना के पीछे है। और यह क्या कैपस्टोन था, खैर, वेलहाउज़ेन का काम, और वह अनुक्रम का प्रदर्शन कर सकता था।

वह क्रम सबसे पहला दस्तावेज़ जे था। अगला दस्तावेज़ एलोहिम था। तो, उन्होंने जे. का दिनांक मूल रूप से डेविड और सोलोमन के समय लगभग 950 में बताया। उन्होंने ई दस्तावेज़ का दिनांक 850 बताया।

और उन्होंने डी दस्तावेज़ को 620 में योशियाह के सुधार के लिए दिनांकित किया। इसका कारण यह है कि उन्होंने मंदिर में कानून की पुस्तक की खोज की, जिसका श्रेय मूसा को दिया गया था।

सवाल पूछा गया कि कानून की किताब मंदिर में कैसे खो सकती है? शिक्षा जगत में हर कोई इस बात से सहमत है कि मूलतः व्यवस्थाविवरण की पुस्तक एक जालसाजी है।

यह एक छद्मलेख है. यह मूसा द्वारा नहीं है. इसकी रचना योशियाह के शासनकाल के दौरान सभी ऊंचे स्थानों को हटाने के अपने सुधार को उचित ठहराने के लिए की गई थी।

तो योशियाह ने यही किया। और उस समय पूर्ण सुधार होता है। आप इसे पुरातत्व में प्रदर्शित कर सकते हैं कि योशियाह के शासनकाल के दौरान, उन्होंने केवल ऊंचे स्थानों को नष्ट कर दिया था।

लेकिन जाहिर है, ऊंचे स्थान उससे पहले भी अस्तित्व में थे। इसलिए, डी दस्तावेज़ अकादमिक दृष्टिकोण से 620 ईसा पूर्व में दृढ़ता से दिनांकित है। और पी दस्तावेज़ निर्वासन या निर्वासन के बाद का है।

और यह देर से कहा गया है. तो, जो हुआ वह यह है कि पूरी बाइबल उलट गई है। तो, जिसे हमने मूसा द्वारा जल्दी समझा था वह अब देर हो चुकी है।

तो, लैब्रिकस जैसी सारी पुरोहिती सामग्री और निर्गमन की सामग्री, जिसे हमने मोज़ेक समझा था, अब उलटी हो गई है। और यह आखिरी बात है. और इसलिए, शिक्षा जगत में यही हुआ है।

और यह एक संपूर्ण दृष्टिकोण बनाता है कि आप बाइबल के स्वयं के दावों पर भरोसा नहीं कर सकते क्योंकि यह कहता है कि इसे मूसा ने लिखा है, लेकिन हम सभी जानते हैं कि मूसा ने इसे नहीं लिखा है। इसलिए, यह गौण है और इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। तो यदि तुम मूसा पर भरोसा नहीं करते, तो तुम दाऊद पर भरोसा क्यों करते हो? तो आपको क्या करना है, ठीक है, यह एक बिल्कुल अलग पाठ्यक्रम है, जाहिर है, मदरसा और परिचय में जहां आपको इन कठिन सवालों का जवाब देना होगा।

आपको उन्हें संबोधित करना चाहिए. और आप देख सकते हैं कि जब मैं परिचय पढ़ा रहा था, तो मैंने बिना किसी माफ़ी के सीधे वेलहौसेन को प्रस्तुत किया। और छात्र यह सोचकर चले गये कि हमारी बाइबिल नष्ट हो गयी है।

लेकिन फिर आप वापस आते हैं और आपको इन तर्कों पर पुनर्विचार करना पड़ता है। और मूलतः, तर्क इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि ईश्वर कभी हस्तक्षेप नहीं करता और कोई वास्तविक भविष्यवाणी नहीं होती। और दिन का दस्तावेज़ वास्तव में उत्पत्ति 49 में याकूब के आशीर्वाद से दिनांकित है और विशेष रूप से जनजातियाँ क्या होंगी, लेकिन कोई वास्तविक भविष्यवाणी नहीं है।

इसलिए, जिसे हम भविष्यसूचक कहते हैं वह सब कालानुक्रमिक होना चाहिए, जिसका अर्थ घटना के समय से है। और जब मैं खड़ा होकर निर्गमन अध्याय छह और उसकी उत्पत्ति के बारे में बात कर रहा था। तो आप इसे कैसे समझते हैं? आप इसे कैसे समझाते हैं? जब मैंने अपना

बचाव किया, मौखिक बचाव किया, तो मुझसे यह प्रश्न यह जानते हुए पूछा गया कि मैं रूढ़िवादी हूँ और मैं वास्तव में पवित्रशास्त्र पर भरोसा करता हूँ।

आप निर्गमन अध्याय छह के प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं? अब मैं रूढ़िवादी उत्तर जानता था, लेकिन मुझे नहीं लगता था कि वे अच्छे थे। मैं उनमें खरीदारी नहीं कर सका. और मैंने बस इतना कहा कि मुझे लगता है कि दस्तावेजी परिकल्पना बेहद प्रशंसनीय है।

और इस समय, मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है। लेकिन ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका मेरे पास उत्तर नहीं है। और अगर मुझे इस पर निर्भर रहना है, तो मेरे पास हर चीज़ का जवाब होना चाहिए।

तब मैं केवल यही निष्कर्ष निकाल सकता हूँ कि मुझे अज्ञेयवादी होना होगा। मैं कभी भी अपने आप को समर्पित नहीं कर सकता क्योंकि मेरा सीमित दिमाग कभी भी अनंत सत्य तक नहीं पहुंच सकता। इसलिए विश्वास करने के लिए मेरे पास हर चीज़ का उत्तर होना ज़रूरी नहीं है।

अगर मुझे ऐसा करना होता, तो मैं कभी विश्वास नहीं करता क्योंकि आपके पास अभी भी ऐसे प्रश्न हैं जिनका मैं उत्तर नहीं देता। मेरे पास इसका उत्तर नहीं है। लगभग 30 साल बाद मैंने एक लेख पढ़ा जिससे मुझे यह समझने में मदद मिली कि एक्सोडस छह में क्या चल रहा था, लेकिन 30 साल तक मेरे पास कोई जवाब नहीं था।

लेकिन मैं अस्पष्टता के साथ रहता हूँ। हम सभी अस्पष्टता के साथ जीते हैं। और इसलिए, मैंने 1995 में एक लेख पढ़ा जो मुझे लगा कि बहुत विश्वसनीय था।

यह इस फार्मूले से निपट रहा था. तुम नहीं जानते थे कि मैं यहोवा हूँ। लेखक ने साफ-साफ बता दिया कि यह पहचानने का फार्मूला है कि आपने पहचाना ही नहीं कि मैं कौन हूँ।

अर्थात् मैं जो हूँ वही हूँ। तुम्हें इसका अनुभव नहीं हुआ. तुम्हें यह पता नहीं था.

निर्गमन से पहले, भगवान ने कभी भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं किया था। जब तक उसने मिस्र को महामारी से नष्ट नहीं कर दिया, तब तक उन्हें कभी पता नहीं चला कि वह कौन था। वह बिल्कुल नया था, अब्राहम, इसहाक और जैकब।

वे नाम तो जानते थे, लेकिन वे कभी नहीं जानते थे कि उस नाम का मतलब क्या है। उन्हें उस नाम की शक्ति का कभी एहसास नहीं हुआ। और इसलिए इसे मान्यता सूत्र कहा जाता है।

और जब आपको मान्यता सूत्र मिल जाएगा, तो आपको पता चल जाएगा कि यह निर्गमन और पुराने नियम की पुस्तक में है। यह युद्ध में है. लेकिन तब जब परमेश्वर लोगों को बन्धुवाई में डाल देता है और ऐसा लगता है कि राजा ने अपना पहाड़ खो दिया है, परमेश्वर ने अपना मंदिर खो दिया है।

राजा का मुकुट धूल में लोट रहा है। फिर आप यहजेकेल में अद्भुत भविष्यवाणियों के साथ आते हैं। फिर से, आपको यह पूरा क्लस्टर मिलता है।

जब तुम इन भविष्यवाणियों को पूरा होते देखोगे, तब जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। और अब यह परमेश्वर के वचन की पूर्ति है कि तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूं। तो यह एक मान्यता सूत्र है और उन्होंने कभी ईश्वर का अनुभव नहीं किया।

वे परमेश्वर को कभी नहीं जानते थे। अब्राहम का ईश्वर का नाम पुकारना ईश्वर की पूर्ण शक्ति को जानने के समान नहीं है। वे अलग चीजें हैं।

जब आप पहली बार सुनते हैं तो वे एक ही चीज़ लगते हैं, लेकिन यह वही चीज़ नहीं है। तो अब इसकी एक नई समझ है। और जहां तक व्यवस्थाविवरण का सवाल है, शाश्वत साक्ष्य राजशाही से पहले का है।

वे राजा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पुस्तक में यरूशलेम का कोई संदर्भ नहीं है। यह स्थानीय केंद्रीय अभयारण्य नहीं बन गया है, लेकिन यह व्यवस्थाविवरण पर पूरी चर्चा है।

मैं डेविड के लेखकत्व के प्रति संदेह और भजन की पुस्तक के प्रति दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि देने की कोशिश कर रहा हूं और क्यों अकादमिक जगत ने सुपरस्क्रिप्ट को अस्वीकार कर दिया है। तो, आपको यह समझने के लिए उस पृष्ठभूमि को समझना होगा कि गुंकल कहाँ से आ रहा है क्योंकि गुंकल इस अकादमिक सोच से बाहर आता है। यह उस संदर्भ से बाहर है जिससे हमें फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण मिलता है और बहुत से रूढ़िवादी फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण में प्रवेश करने में बहुत झिझकते हैं क्योंकि यह इसके पीछे आलोचना की मिट्टी से आता है।

जहां तक व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में व्यवस्थाविवरण के एक सूत्र बनने की बात है, तो मैं आपको सुझाव दूंगा कि आप व्यवस्थाविवरण पर मैककोविल की टिप्पणी पढ़ें। मुझे लगता है कि यह अपोलो श्रृंखला की शानदार टिप्पणियों में से एक है। यदि आप ड्यूटेरोनॉमी की डेटिंग के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो आपको मैककॉनविले को पढ़ना चाहिए।

मेरे पास व्यवस्थाविवरण के बारे में बस एक शब्द है। मुझे लगता है कि रूढ़िवादियों ने बहुत बड़ी गलती की है। उन्होंने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की तुलना व्यवस्था की पुस्तक से की है।

मैंने स्वयं यह निष्कर्ष निकाला है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक निर्वासन के दौरान लिखी गई थी। वह किताब है। लेकिन यह किताब मूसा द्वारा कानून की किताब के लेखन के बारे में है।

यह कानून की किताब का इतिहास है। व्यवस्था की पुस्तक मूसा की है, परन्तु व्यवस्थाविवरण की पुस्तक मूसा की नहीं है। इसीलिए आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंत में मूसा का मृत्युलेख प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि उसने यह पुस्तक नहीं लिखी है।

उसने व्यवस्था की पुस्तक लिखी और उसे सन्दूक के बगल वाले तम्बू में रख दिया। मेरा मानना है कि मूसा ने यही लिखा था। लेकिन व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में मेरे फैसले में 59 छंद हैं जो मूसा ने नहीं लिखे।

इसलिए मुझे लगता है कि बाइबल जो कह रही थी उससे आगे बढ़कर और अधिक कहने में हमने कुछ गलतियाँ की हैं। इसने कभी नहीं कहा कि मूसा ने कानून की किताब लिखी। उसने कहा, मूसा ने व्यवस्था की पुस्तक पढ़ाई।

उन्होंने कानून की किताब लिखी। इसलिए, हमें थोड़ा और अधिक परिष्कृत होना होगा, मैं अपनी चर्चा में सुझाव दे रहा हूँ जब हम इन मामलों पर चर्चा करते हैं। खैर, यह तो पृष्ठभूमि है।

जहां तक एक किस्से की डेटिंग का सवाल है, जब मैं डलास में पढ़ा रहा था, दक्षिणी मेथोडिस्ट हाईलैंड बैपटिस्ट चर्च, दक्षिणी मेथोडिस्ट चर्च, दक्षिणी मेथोडिस्ट चर्च जो दक्षिणी मेथोडिस्ट विश्वविद्यालय से संबद्ध है, मैं एक कक्षा का अध्यक्ष था। मैं समझता हूँ कि यह एक वर्ग बहुत उदार था। कक्षा के अध्यक्ष ने मुझे यह जानते हुए बुलाया कि मैं ईसाई धर्म प्रचारक भी हूँ।

उन्होंने कहा कि मैं चाहूंगा कि आप आएँ और हमारी कक्षा को बताएं कि इंजील क्या है। इसलिए हम जानते हैं कि आप क्या मानते हैं और आप कहाँ से आ रहे हैं। मैंने कहा, ज़रूर, मुझे ऐसा करने में खुशी होगी।

मेरी एक आवश्यकता है। हर कोई बाइबल लेकर आता है क्योंकि जब तक आपके पास बाइबल नहीं होती और आपको बाइबल नहीं देखनी पड़ती तब तक आप समझ नहीं पाते कि मैं कौन हूँ। यह मौलिक है।

यदि आप चाहते हैं कि हर कोई आये, तो आप सभी महान हैं। आपके पास एक बाइबिल होगी। मैं आकर पढ़ाने को तैयार हूँ, लेकिन यदि नहीं, तो मैं नहीं आऊंगा।

ज़रूर, हमारे पास एक बाइबिल होगी। हर किसी के पास बाइबिल है। जब मैं वहां पहुंचा तो किसी के पास बाइबिल नहीं थी, एक भी नहीं, यहां तक कि राष्ट्रपति के पास भी नहीं।

तो, मैंने कहा, अपनी बाइबिल निकालो, कुछ नहीं। मैं राष्ट्रपति की ओर मुड़ा और मैंने कहा, देखिए, हमारे बीच एक समझौता हुआ था कि मैं तभी पढ़ाऊंगा जब हर किसी के पास बाइबिल होगी, लेकिन किसी के पास बाइबिल नहीं है। इसलिए, मैं पढ़ा नहीं रहा हूँ और मैं जा रहा हूँ।

खैर, आप कल्पना कर सकते हैं कि उसने क्या किया होगा। उन्होंने यह क्लास बनाई थी और हर कोई इसका इंतजार कर रहा था। अब मैं बाहर जा रहा हूँ।

लेकिन मैंने सोचा, चलो, यहाँ एक अच्छा दृश्य वस्तु पाठ हो। इंजीलवादी बाइबल पर विश्वास करते हैं और हम परमेश्वर के वचन पर भरोसा करते हैं। तो, आपको यह समझना होगा।

यदि तुम्हें वह समझ नहीं आया तो मैं जा रहा हूँ। खैर, जब उसने देखा कि कक्षा बिखरने वाली है, तो उसने कहा, अच्छा, हमारे पास बाइबल कहाँ है? आखिरकार उन्होंने निर्णय लिया कि उनके चौकीदार को पता होगा कि पुरानी बाइबलें कहाँ हैं। तो, उन्हें चौकीदार और चौकीदार मिल गए, मुझे लगता है कि उनके पास तीन तहखाने थे।

हम तीसरे तहखाने और पिछली कोठरी में गए। वहाँ चर्च की पुरानी बाइबिलें थीं। चर्च में बाइबिल खो गई थी।

यह एक अविश्वसनीय किस्सा था। वहाँ किसी को भी मेरी बात से दिक्कत नहीं होगी, हां, मनश्शे और उसके धर्मत्यागियों के शासनकाल के दौरान कानून की किताब मंदिर में खो सकती थी। जाहिर तौर पर यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण, किस्सा है।

और एक विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण के रूप में, हमें इससे भी अधिक कुछ चाहिए। लेकिन यह दर्शाता है कि मैं क्या कह रहा हूँ कि जो सतह पर अविश्वसनीय लगता है, वह वास्तव में उतना अविश्वसनीय नहीं है। तो यह आलोचना के निर्माण की पृष्ठभूमि है।

तो, हमें वास्तव में इसकी थोड़ी आवश्यकता है। हालाँकि, जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक अलग पाठ्यक्रम है। लेकिन उस पृष्ठभूमि से ही हमें गुंकेल जैसा व्यक्ति मिलता है।

उन्हें वेलहाउसियन दृष्टिकोण के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। और क्या हुआ, वेलहाउसियन दृष्टिकोण ने इन सभी ईसाई सेमिनारों को ध्वस्त कर दिया। वेलहाउजेन ने स्वयं कहा कि वह लूथरन मदरसा में पढ़ा रहे थे।

उन्होंने कहा कि मैं अपने छात्रों के विश्वास को नष्ट कर रहा हूँ। मैं विश्वविद्यालय में जाकर पढ़ाने जा रहा हूँ। जिसके बाद धर्मशास्त्रियों ने वेलहाउजेन को उठाया और इसे मदरसों में पढ़ाया और चर्च को मार डाला।

सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए। और यह आज हमारी पूरी समस्या का हिस्सा है। यह वास्तव में इस बुनियादी उदारवाद से लगभग सौ वर्ष पीछे चला जाता है।

और मैं वहाँ नहीं हूँ, जैसा कि आप सुन सकते हैं। ठीक है। इसलिए, साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को मैंने विभाजित किया है कि वे कौन लोग हैं जिनके बारे में हम मुख्य रूप से बात कर रहे हैं और वेलहाउजेन के रूप में इसकी पृष्ठभूमि इसकी शुरुआत है।

तब आपके पास ब्रिग्स था। वह एक अमेरिकी प्रेस्बिटेरियन विद्वान थे और बाद में प्रोटेस्टेंट एपिस्कोपल चर्च में पुजारी थे। तथ्य यह है कि प्रेस्बिटेरियनों ने उनके विचारों के कारण उन्हें पदच्युत कर दिया था।

टी.के. चेनी अंग्रेज़ देवता थे और बर्नार्ड डुहेम जर्मन थे। उन्होंने इसे पेश किया, इस नए दृष्टिकोण का प्रचार किया, या इसके प्रति प्रभावशाली थे। वेलहाउजेन से पहले का लगभग सारा अकादमिक साहित्य अधिक पारंपरिक और अधिक रूढ़िवादी होगा।

लगभग 1870 से, वेलहाउज़ेन के समय से लेकर गुंकेल तक, मान लीजिए 1920, सारा अकादमिक साहित्य स्रोत दस्तावेज़ों और उस तरह की चीज़ों के वेलहाउज़ेन दृष्टिकोण पर आधारित था। 1920 से शुरू होकर, यहां के महत्वपूर्ण विद्वान हरमन गुंकेल नाम के एक व्यक्ति हैं। उन्होंने अपना पहला काम 1904 में लिखा था।

टिप्पणी लिखी, मुझे लगता है कि 1920 या 1924 में। उनके अंतिम कार्य, उनके विशाल कार्य को कहा जाता है, यह सब जर्मन है। वैसे भी, मैं स्तोत्रों की पुस्तक या कुछ और, इज़राइल के धार्मिक साहित्य का परिचय देना चाहूंगा।

1932 में उनकी मृत्यु हो गई और उनके छात्र जोआचिम बेउरिग ने मरणोपरांत 1933 में काम पूरा किया। यह एक विशाल है, यह आमतौर पर जर्मनिक है। यह बहुत बड़ा विवरण है, बहुत वैज्ञानिक है।

इसका अनुवाद 1998 तक नहीं हुआ था। आप इसे मर्सर प्रेस से प्राप्त कर सकते हैं, जो संबद्ध है, मुझे लगता है, वेलहाउज़ेन मैकॉन, जॉर्जिया या ऐसा ही कुछ था। लेकिन मर्सर प्रेस ने इसे अनुवादित रूप में प्रकाशित किया है।

यदि आप \$550 खर्च करने को तैयार हैं, तो आप इसे खरीद सकते हैं, लेकिन इसकी कीमत यही है। मैं तुम्हें बहुत सारा सामान मुफ्त देने जा रहा हूँ, शायद उससे भी ज़्यादा जो तुम चाहते हो। लेकिन किसी भी कीमत पर, मैंने इसमें से कुछ चीज़ें ही स्कैन कीं।

इसमें बहुत सारा विवरण है, मैं इसे पूरा टाइप नहीं करने जा रहा था। तो, मैंने अभी इसे स्कैन किया। इसलिए, मैंने किताब ली और उसे इलेक्ट्रॉनिक रूप में रख दिया।

इसलिए, मैं इसे स्कैन कर सकता हूँ और इस तरह से इसके साथ काम कर सकता हूँ। तो फॉर्म क्रिटिक की विधि क्या है? खैर, सबसे पहले, वह ऐतिहासिक आलोचना को खरीदता है, उदाहरण के लिए, संदेहवाद, सुसंगतता और सादृश्य। यही उन पूर्वधारणाओं का आधार है।

मैंने उस बारे में बात की. वे सुपरस्क्रिप्ट को खारिज कर देते हैं क्योंकि बाइबल और उसका स्वयं का लेखकत्व विश्वसनीय नहीं है। उनका दावा है कि सुपरस्क्रिप्ट भजन का हिस्सा नहीं हैं, भले ही भजन की किताब के बाहर हर भजन या भजन में एक सुपरस्क्रिप्ट है जैसा कि मैंने आपको दिखाया था।

मैंने कहा, निर्गमन 15, न्यायाधीश 5, इत्यादि, 2 शमूएल 22, और भी क्या। लेकिन यह मान लिया गया है कि यह गौण है। परेशान करने वाली बात क्या है, यहां तक कि टीए और IV अध्ययन बाइबिल में भी, यह स्पष्ट नहीं है, इनमें से कुछ चीज़ों पर दृढ़ नहीं है।

पुरानी एनआईवी अध्ययन बाइबिल बहुत अच्छी है। वह एक महान विद्वान हैं, लेकिन यह उतना दृढ़ नहीं है जितना मैं चाहता हूँ। इसलिए, हम व्याकरणिक-ऐतिहासिक पद्धति में विश्वास करते हैं कि शब्दों का अर्थ ऐतिहासिक संदर्भ में होता है।

अब हमने डेविड को खत्म कर दिया है। ऐतिहासिक अवधारणा क्या है? इस सामग्री की उत्पत्ति कहाँ से हुई? आप डेविड के बिना, सुपरस्क्रिप्ट के बिना देख सकते हैं, हम वास्तव में समुद्र में हैं। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि यह कहाँ से आता है या इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है।

इसको लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। तो यह वही है, आलोचना के माध्यम से, गंकेल उस ऐतिहासिक संदर्भ को तय करने की कोशिश कर रहे थे जिसमें से भजनों की उत्पत्ति हुई थी, क्योंकि सुपरस्क्रिप्ट को खारिज कर दिया गया था। हम इसे एक ऐतिहासिक संदर्भ देने के लिए ढूँढने का प्रयास कर रहे हैं।

और तथाकथित वैज्ञानिक टाइपोलॉजी के अनुसार, उन्होंने इसका दिनांक, पुस्तक, अधिकांश सामग्री, सारी सामग्री, पहले मंदिर से नहीं, जिसे सुलैमान ने बनाया था, बल्कि दूसरे मंदिर से, जो हागौ और जकर्याह के दिनों में बनाया गया था। बेशक, यह एक उन्नत पाठ्यक्रम है जो इसके पीछे बाइबिल की नींव रखता है। ठीक है।

इसलिए, जिस तरह से उन्होंने इसे दिनांकित किया, वह तथाकथित वैज्ञानिक टाइपोलॉजी के अनुसार था, अर्थात् उन्होंने सोचा कि वे भाषा के विकास का पता लगा सकते हैं। प्रारंभिक हिब्रू क्या थी? लेट हिब्रू क्या थी? और उन्होंने सोचा कि वे न केवल भाषा के विकास का पता लगा सकते हैं, बल्कि वे धर्म के विकास का भी पता लगा सकते हैं। जीववाद से बहुदेववाद, हेनोथिज्म, एकेश्वरवाद तक देखने का एक प्रकार का वाक्यांश।

और जैसा कि इसे धार्मिक विकास के दर्शन द्वारा दिनांकित किया गया है, भजन अत्यधिक, अत्यधिक आध्यात्मिक हैं। और इसलिए, उन्हें स्पेक्ट्रम के अंत में बहुत देर हो जाएगी। इसे डेटिंग करने के यही कारण थे।

इसके बारे में मेरा आलोचनात्मक मूल्यांकन, निश्चित रूप से, मैं बुनियादी ऐतिहासिक आलोचना से असहमत हूँ क्योंकि यह बाइबल से ही मेल खाता है, जो मुझे एक ऐसे ईश्वर के साथ प्रस्तुत करता है जो प्रार्थना का उत्तर देता है और गतिशील रूप से हस्तक्षेप करता है। तब से जो हुआ उसने वैज्ञानिक भाषा की नींव को तोड़ दिया, वह है 1929 में 1940 में प्रकाशित उगारिटिक पाठ की खोज। रास शामरा से आए इन ग्रंथों में, यदि आप सीरिया, फ़िलिस्तीन, लेबनान के मानचित्र के बारे में सोच सकते हैं, और आप पता है, आपके पास साइप्रस, साइप्रस का द्वीप है।

और साइप्रस का आकार पंख जैसा है। यदि आपने पंख की नोक ली और आप सीधे तट पर गए, तो वहाँ उगारिट, आधुनिक रस शामरा है। और यहीं पर इन गोलियों की खोज हुई।

ये गोलियाँ हमें वास्तव में बताती हैं कि कनानी धर्म क्या था। वे बाल के उपासक हैं। वे बाल के मन्दिरों के लिये हैं।

वे बाल की कविताएँ और प्रशंसा हैं। वे समानता में हैं, हिब्रू भजन की तरह, कविता में सब कुछ प्राचीन निकट पूर्व में समानता में है। वही शब्द मिल रहे हैं।

इसलिए, वैज्ञानिक रूप से, हम अब इसे भाषाई रूप से अंतिम मंदिर काल का नहीं बता सकते। ताकि भाषा से पता चले कि यह पहले हो सकता है। तब से धर्म के विकास के पूरे विचार पर प्रश्नचिह्न लग गया है और यह उतना सरल नहीं है।

तो, उससे बुनियादी बुनियाद खत्म हो चुकी है। लेकिन यह मेरी आलोचना है। मुझे लगता है कि यह भजनों की व्याख्या के लिए भी विनाशकारी है।

और मेरे दृष्टिकोण से, मैं साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के बारे में बात कर रहा हूँ, और इन सभी में, मेरे पास कोई नहीं है, मुझे उनमें कोई व्याख्यात्मक मूल्य नहीं दिखता है। इसलिए, यदि आपको कोई व्याख्यात्मक मूल्य नहीं मिलता है, तो मुझे बहुत अधिक धार्मिक या आध्यात्मिक मूल्य भी नहीं मिलेगा। तो, यह एक साथ चलता है।

खैर, यह मुझे फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण पर लाता है। वह पृष्ठभूमि है। मैं साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और उसकी अपनी आलोचना के बारे में बात कर रहा हूँ।

और अब मैं फॉर्म-क्रिटिकल दृष्टिकोण पर निर्भर हूँ। और वह मूल रूप से मैं यहाँ 1900 रखूंगा, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका मूल कार्य 1904 था। लेकिन मूल रूप से 1900 से लेकर आज तक, सभी विद्वतापूर्ण साहित्य आलोचना से प्रभावित हैं।

और आप देखेंगे कि जब मैं पृष्ठभूमि के माध्यम से अपनी टिप्पणी शुरू करता हूँ, तो मैं सवाल पूछ रहा हूँ कि यह साहित्य का कौन सा रूप है? यह कैसा भजन है? यह एक बुनियादी सवाल है जो हमें पूछना है। यह दृष्टिकोण की ताकत है क्योंकि यह हमें विभिन्न प्रकार के भजनों और विभिन्न प्रकार के भजनों से अवगत कराता है। और हम उन्हें भजन या याचिका या निर्देश इत्यादि के रूप में बिल्कुल अलग ढंग से सोच सकते हैं।

मैं उस व्यक्ति के माध्यम से कहता हूँ जो यहाँ प्रभावशाली था कि चर्च के पूरे इतिहास में, कुछ टिप्पणीकारों ने माना कि भजन विभिन्न प्रकारों में आते हैं, जैसे भजन 51 जैसे प्रायश्चितात्मक भजन। और वे चर्च की खुशी से लेकर दर्द तक अलग-अलग भावनात्मक जरूरतों को पूरा करते हैं, विरोध करना, कष्ट देना। और भजन हमारे द्वारा अनुभव की जाने वाली हर भावना को संबोधित करेंगे।

और इसलिए, वे इन विभिन्न प्रकार के भजनों को पहचानते हैं, लेकिन उन्होंने इसे वास्तव में वैज्ञानिक तरीके से कभी नहीं किया। जर्मन विद्वान गंकल के साथ बड़ा बदलाव यह आया कि वह फॉर्म आलोचना के महान चैंपियन थे। उन्होंने आलोचना के स्वरूप को वैज्ञानिक ढंग से परिष्कृत किया।

और वहाँ मैं आपको उनकी ग्रंथ सूची देता हूँ। पैराग्राफ के मध्य में, 1933 में अपने काम के बाद, फुटनोट 33, उन्होंने साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के निष्कर्षों को स्वीकार किया लेकिन इसे महत्वपूर्ण रूप से संशोधित किया। वह विश्वविद्यालय में अपने दिन और अपनी उम्र का एक उत्पाद है, जिस पर वेलहाउज़ेन का प्रभाव पड़ा है।

और आलोचना के माध्यम से, उन्होंने भजनों की ऐतिहासिक सेटिंग स्थापित करने की कोशिश की। अब यहीं वह बेस से बाहर चला गया और यहां खारिज कर दिया गया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि इन रूपों की उत्पत्ति पहले मंदिर के युग में हुई थी, डेविड से नहीं, बल्कि कम से कम निर्वासन से पहले।

लेकिन मौजूदा भजन, जो इन प्रारंभिक रूपों की नकल करते हैं, दूसरे मंदिर के काल के हैं। तो आप देख सकते हैं कि वह अपनी उम्र का उत्पाद है। सभी शिक्षाविदों ने कहा कि यह दूसरा मंदिर है।

उसके पिता उसे बता रहे हैं कि यह पहले मंदिर जैसा है। तो, इसलिए, वह इसे एक साथ रखने के लिए क्या करता है? खैर, स्वरूप की उत्पत्ति पहले मंदिर में हुई, लेकिन भजन स्वयं दूसरे मंदिर से आता है। यदि आप चाहें तो उन्हें उस राजनीतिक शुद्धता को संतुष्ट करना होगा।

और वह ऐसा मानता था। तो, इसने पहले मंदिर की नकल की और वह सभी भजनों की तरह अपनी उम्र का आदमी है। तो, उसका तरीका क्या था? दुगना।

उनकी पहली विधि वह थी जिसे कहा जाता है, और सब कुछ, जैसा कि मैं कहता हूं, पहली सेमेटिक भाषा जर्मन है, सिट्ज़ इम लेबेन है। और इसका मतलब यह है कि जीवन में वह परिदृश्य क्या था जहां इस भजन की उत्पत्ति हुई? तो, नीतिवचन सुलैमान द्वारा नहीं हैं, लेकिन उनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई? खैर, उनकी उत्पत्ति आंगन में हुई या उनकी उत्पत्ति घर में हुई, लेकिन उनकी उत्पत्ति सोलोमन से नहीं हुई।

तो, आपको जीवन में एक सेटिंग मिलती है जहां से इसकी उत्पत्ति हुई। दाऊद के भजनों की उत्पत्ति कहाँ से हुई? खैर, उनमें से कुछ की उत्पत्ति मंदिर में हुई और अन्य भजनों की उत्पत्ति निजी प्रार्थनाओं या जो भी हो, में हुई। तो, आप जीवन में उस सेटिंग को पाने का प्रयास करें जहां से उनकी उत्पत्ति हुई।

इसलिए, प्रत्येक स्तोत्र में, आप सिट्ज़ इम लेबेन को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जीवन की वह सेटिंग जहाँ यह स्तोत्र संचालित होता है। अब आप ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देख सकते हैं, मैंने भजन 4 में क्या किया, मैं ऐतिहासिक संदर्भ प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन मैं यह नहीं पूछ रहा हूं कि डेविड के विपरीत इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई? मैं एक अलग प्रश्न पूछ रहा हूँ। मैं पूछ रहा हूँ, वह कौन सी ऐतिहासिक स्थिति है जिसने उस प्रार्थना को प्रेरित किया? यह वही बात नहीं है।

आलोचना का स्वरूप यह पूछना है कि इसकी उत्पत्ति कहाँ से होती है? और इसका प्रसार कहाँ होता है? इसे कहाँ प्रसारित किया गया? यह परंपरा कहाँ पारित की गई थी? और ऐसा माना जाता है कि इसे पारित कर दिया गया था। इसकी उत्पत्ति मौखिक रूप से अधिक हुई। अब डेविड के बारे में भूल जाओ और वे मौखिक रूप से उत्पन्न हुए और प्रार्थनाएँ मौखिक रूप से पारित की गईं।

खैर, यह पहला भाग है, जीवन में सिट्ज़ इम लेबेन, सेटिंग स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। दूसरे को लेगाटम कहा जाता है। यह शैली या रूप के लिए एक जर्मन शब्द है।

और यह है, आपने देखा कि कुछ भजनों में एक आदमी की तरह कुछ मनोदशाएं होती हैं। स्तोत्र की कुछ शब्दावली होती है। उनके अलग-अलग रूपांकन हैं, अलग-अलग रूपरेखाएँ हैं।

इसलिए, मैं कहता हूँ, वे वर्गीकृत करते हैं, यह दृष्टिकोण भजनों को उनके सामान्य शब्दों, मनोदशाओं, विचारों, रूपांकनों और अन्य साहित्यिक मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत करता है। और इस दृष्टिकोण को प्राचीन निकट पूर्वी भजनों के साथ सादृश्यों से समर्थन प्राप्त हुआ जो कि स्तोत्र के समान श्रेणियों से संबंधित हैं। तो इस बिंदु पर, पुरातत्व के कारण छात्रवृत्ति अब जागरूक है।

वे अब सुमेरियन और अक्काडियन साहित्य से अवगत हैं। अब उनके पास सुमेर के भजन हैं। अब उनके पास मेसोपोटामिया युग के भजन हैं।

अब उनके पास मिस्र के भजन हैं और वे भी उसी रूप के हैं। तो प्राचीन निकट पूर्व के साथ इस तरह की सादृश्यता ने पुष्टि की कि हमारे पास साहित्य के विभिन्न प्रकार हैं। और वह उसके निपटान में था।

1930 में उनके पास जो कुछ भी नहीं था, युगारिटिक ग्रंथ उनके पास नहीं था, वह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ था। वे उनके 10 साल बाद प्रकाशित होने जा रहे हैं। उन्होंने केवल यह दिखाया कि सामग्री बहुत पहले की है क्योंकि वे 1400 से 1200 ईसा पूर्व की हैं।

तो, इससे पता चला कि सामग्री वास्तव में किसी के सपने से भी बहुत पहले की थी। तो, पृष्ठ 52 पर सामान्य शब्दों, रूपांकनों, विचारों, मनोदशाओं आदि को देखने के बाद उनका निष्कर्ष, पृष्ठ के शीर्ष पर, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भजन के पांच प्रमुख प्रकार थे। स्तुति गान हो रहे थे।

ठीक है, फिर उसके पास शाही भजन हैं, लेकिन वह वास्तव में प्रशंसा के भजनों के अंतर्गत समाप्त होता है। दूसरे शब्दों में, वे भजन, राजा की प्रशंसा करते हैं। व्यक्तिगत विलाप, सांप्रदायिक विलाप और धन्यवाद स्तोत्र थे।

तो ये उसके प्रमुख प्रकार, स्तुति स्तोत्र और शाही स्तोत्र हैं। अब उसने 10 शाही स्तोत्रों के साथ समाप्त किया क्योंकि इन स्तोत्रों में राजा का उल्लेख था और ये भजन 2 होंगे। मैंने अपने राजा को सियोन, अपनी पवित्र पहाड़ी पर स्थापित किया है। हमने भजन 20 को देखा, जहां वे युद्ध के लिए निकलते समय राजा के लिए प्रार्थना करते हैं।

हमने भजन 21 को देखा, जहां राजा युद्ध से वापस आता है। भजन 45 राजा के विवाह का वर्णन करता है और गीत गाता है, उसके वैभव और उसकी अन्यजाति दुल्हन की सुंदरता के बारे में बात करता है जो उसके लिए लाई जा रही है। तो, यह राजा की शादी है।

भजन 72 वास्तव में सुलैमान द्वारा रचित है। यह फिर से राजा के बारे में है। हम यह देखने जा रहे हैं कि स्तोत्र के संपादन के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है क्योंकि राजा के बारे में स्तोत्र 2 ही परिचय है।

भजन 72 पुस्तक दो का अंत है, जो राजा के बारे में है। यह अंतरिक्ष में सभी देशों पर और पूरे इतिहास में समय पर राजा के सार्वभौमिक शासन के बारे में बात कर रहा है। वह 72 है।

89, मुझे लगता है कि इसमें राजा का उल्लेख नहीं है। इस दृष्टिकोण से 101 अधिक कठिन है, लेकिन 101 को अक्सर लूथर के कार्यकाल के लिए राजकुमारों के लिए एक दर्पण माना जाता है। यह नेतृत्व के लिए है और उन्हें कैसा होना चाहिए।

निस्संदेह, 110, प्रसिद्ध स्तोत्र है। यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, और तू मलिकिसिदक की रीति पर राजा होगा। और वह भजन 110 है।

भजन 132 में डेविड द्वारा सन्दूक लाने का उल्लेख है और 144 में फिर से राजा का उल्लेख है। तो ये हैं 10 शाही स्तोत्र। पिछले व्याख्यान में मैंने जो किया है, उसे मैंने जॉन ईटन के साथ आगे बढ़ाया है।

तो, यह केवल इन 10 स्तोत्रों से आगे तक फैला हुआ है, जो पूरे स्तोत्र में बिखरे हुए हैं। इसमें कोई तुक या कारण नहीं है। 2 और 20 और 21 और 45.

72 उन्हें वहीं रखता है जहां वह है, लेकिन यह राजा पर ध्यान केंद्रित रखता है। यह इन 10 स्तोत्रों से कहीं अधिक व्यापक है। लेकिन गंकल औपचारिक रूप से शाही भजनों की पहचान करने वाले पहले व्यक्ति हैं, जो एक ताकत है।

फिर हमारे पास अलग-अलग विलाप हैं और गुंकल ने हमारे पसंदीदा भजनों में भजन 27 जैसे विश्वास के भजन शामिल किए हैं, जैसे भजन 91, विश्वास का गीत। एक हजार तुम्हारी ओर गिरेंगे, दस हजार तुम्हारी दाहिनी ओर। ये विश्वास के गीत हैं।

जब वे पैरों में नीचे चले जाते हैं या सूखे की तरह हो जाते हैं तो सांप्रदायिक विलाप होते हैं। फिर धन्यवाद स्तोत्र हैं। इनमें एक अंतर है और एक काम है जो मुझे सचमुच पसंद है।

यह क्लॉस वेस्टरमैन का काम है। उन्होंने वास्तव में भजनों और कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा के गीतों के बीच अंतर किया। तो, मैं इसे बनाऊंगा।

तो, यह सही है। हमें भजन में भेद करना होगा। स्तुति गीत दो प्रकार के होते हैं।

आपके पास भजन हैं और वे आम तौर पर भगवान का जश्र मनाते हैं। वे ईश्वर के बारे में निर्माता के रूप में बात करते हैं और वे ईश्वर के बारे में इज़राइल के इतिहास के चैंपियन के रूप में बात करते हैं। इसलिए वे मुख्य रूप से सृष्टि और इज़राइल के इतिहास के बारे में बात करते हैं।

वे भजन हैं। कृतज्ञ प्रशंसा के गीत विलाप के विपरीत हैं। अर्थात्, ईश्वर ने विशेष रूप से प्रार्थना का उत्तर दिया है और आप अपनी प्रार्थना के उत्तर के लिए विशेष रूप से ईश्वर को धन्यवाद दे रहे हैं।

ठीक है। तो, ये पाँच प्रमुख प्रकार हैं। ठीक है।

इसलिए, मैं इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करने जा रहा हूँ। मैं सिट्ज़ इम लेबेन पर कुछ ज्यादा ही नकारात्मक हूँ। मेरा मानना है कि भजन और कृतज्ञ गीत मंदिर के लिए रचे गए थे।

इसीलिए वे मूल रूप से भगवान के लोगों के गाने के लिए बनाये गये थे। मेरा मानना है कि कृतज्ञतापूर्ण गीत थैंक्सगिविंग के बलिदान को अर्पित करने के साथ-साथ गाए गए थे, जो इसके साथ-साथ चला। लेकिन कुल मिलाकर, मुझे संदेह है कि हम यह तय कर सकते हैं कि डेविड के भजनों की उत्पत्ति स्वयं के अलावा कहां से हुई है।

अधिक सकारात्मक रूप से, यहां तक कि डेविड के गाने जो व्यक्तिगत रूप से उत्पन्न हुए होंगे, उन्हें मंदिर में उपयोग करने के लिए संगीत निर्देशक को सौंप दिया गया था। उनकी उत्पत्ति मंदिर में नहीं हुई, लेकिन उनका उपयोग मंदिर में किया जाने लगा। वहां कुछ अंतर है, लेकिन मेरी सोच उनके बीच है।

और चौथे नंबर पर, मैं कहूंगा कि यह अटकलबाजी है। वास्तव में जीवन की मूल सेटिंग के बारे में पूर्ण सहमति नहीं है। मैं सभी अलग-अलग दृष्टिकोणों में नहीं जा रहा हूँ।

यह हमारे लिए बहुत विस्तृत है। मैं आपको संक्षेप में बता रहा हूँ कि ब्रुगेमैन और गोटवालड तथा इनमें से कुछ अन्य साथी क्या कहते हैं। गैटुंग के बारे में क्या? क्या वे सचमुच इन विशिष्ट प्रकारों में आते हैं? मेरा मानना है कि क्रॉनिकलर गंकल से सहमत होगा कि ये तीन अलग-अलग प्रकार हैं।

यहां हमारे पास 1 इतिहास 16.4 है। मुझे लगता है मैंने अनुवाद नहीं किया। हाँ मैंने किया। मैं वहां उन्नत छात्रों को हिब्रू देता हूँ।

और फिर मैं इसका अनुवाद करता हूँ। तब उस ने लेवियोंमें से कुछ को यहोवा के सन्दूक के साम्हने सेवक नियुक्त किया। और इसमें तीन प्रकार बताए गए हैं - आह्वान करना, धन्यवाद देना और प्रशंसा करना।

वे गुंकल द्वारा पहचाने गए पांच प्रकारों में से तीन हैं। मुझे लगता है कि गंकल ने रॉयल स्तोत्रों को अलग करके गलती की है क्योंकि मुझे लगता है कि यह इन 10 स्तोत्रों से कहीं अधिक व्यापक है। तो अब मेरे पास पाँच में से तीन हैं।

मुझे याद है जब मैंने पहली बार इसे पढ़ा था, जब मैं इसे पढ़ रहा था, तो मैं खुद को गंकल से परिचित कर रहा था। मैंने कहा, हाँ, मुझे लगता है कि इसका कोई मतलब है। मैंने इतिहास पढ़ा और मैं सचमुच अपनी कुर्सी से गिर पड़ा।

यहाँ यह था, क्रॉनिकल ने हमें पहले ही बताया था कि तीन प्रकार थे। मुश्किल बात यह है कि मैं यहां एनआईवी अनुवाद से सहमत नहीं हूँ। अर्थात्, ध्यान दें कि कैसे ईएसवी, मुझे लगता है कि सही कहता है, फिर उसने कुछ लेवियों को प्रभु के सन्दूक के सामने आह्वान करने के लिए मंत्री के रूप में नियुक्त किया।

गौर करें कि प्रशंसा करने के लिए एनआईवी में क्या होता है। इसलिए याचिका करने के बजाय, यह स्तुति, धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए एक ही बात कह रहा है। एनआईवी में तीनों प्रकार के स्तुति स्तोत्र मौजूद हैं।

तो, मुद्दा यह है कि हिब्रू दांव पर है, यहां हिब्रू शब्द लम्रात्जेह है। तो कौन सा सही है? और मूल रूप से ग्लॉसेस, मुझे लगता है, ठीक है, लम्रात्जेह, जिसका अनुवाद यहां किया गया है, भजन 20 में याचिका द्वारा प्रशंसा का अनुवाद किया गया है, सुपरस्क्रिप्ट जहां आपके पास लम्रात्जेह है और एनआईवी के पास डेविड की एक याचिका है। तो, इसका अनुवाद याचिका द्वारा किया गया है।

तो क्यों न 1 इतिहास 16.4 में एक याचिका का अनुवाद किया जाए। दूसरा है भगवान ने आपके लिए जो किया उसे स्वीकार करने की सार्वजनिक प्रशंसा, होडोट और स्तुति, हलील। और हलील इस बात से अधिक संबंधित है कि ईश्वर कौन है और होडोट, धन्यवाद इस बात से अधिक संबंधित है कि ईश्वर ने विशेष रूप से क्या किया। इसलिए, मुझे आशा है कि मैंने यहां आपको परेशान नहीं किया है, लेकिन मैं सुझाव दे रहा हूँ कि, क्रॉनिकल के अनुसार, डेविड ने लेवियों को भगवान से प्रार्थना करने, भगवान ने जो किया है उसके लिए विशेष धन्यवाद देने और सामान्य रूप से भगवान की स्तुति करने के लिए नियुक्त किया है।

हमारे पास तीन प्रकार के भजन हैं, उनमें से तीन, और उन्होंने भेद किया था, और मुझे लगता है कि मूल रूप से गुंकल के पांच प्रकारों को देखें, आप उन्हें उन तीन प्रकारों में उबाल सकते हैं जहां आपके पास प्रशंसा के भजन हैं, पृष्ठ 52 पर वापस जा रहे हैं, स्तुति के भजन. शाही स्तोत्र मनोदशा से नहीं बल्कि शब्द से है। आपके पास व्यक्तिगत विलाप बनाम सांप्रदायिक विलाप है।

खैर, ये व्यक्तिगत याचिका बनाम सांप्रदायिक याचिका होगी। इसमें कुछ वैधता है। लेकिन अगर आप समझते हैं कि यह राजा है, तो राजा और प्रजा के बीच अंतर करना कठिन है।

वह शाही अवधारणा को इन अन्य स्तोत्रों तक विस्तारित नहीं करता है। तो उसके पास दो तरह का विलाप या याचना होती है। क्या आप मेरे साथ हैं? इसलिए हम मूल रूप से दोनों में से एक के साथ समाप्त हुए।

और अंतिम धन्यवाद है, चाहे व्यक्ति का हो या समुदाय का। और वह होडोट है। इसलिए मूल रूप से सामग्री, मनोदशा या शब्दों के अपने विश्लेषण से, वह तीन मौलिक प्रकार के भजनों के साथ समाप्त हुआ, जो कि क्रॉनिकल ने बिल्कुल वैसा ही कहा जैसा डेविड ने किया था।

हाँ, फिल. मैंने सुना है कि किसी ने प्रशंसा को इस बात की घोषणा के रूप में परिभाषित किया है कि ईश्वर कौन है और उसने क्या किया है। तो वह परिभाषा वास्तव में तीन में से दो पर आती है।

आपको वह परिभाषा पसंद नहीं है? नहीं, मुझे वह परिभाषा पसंद है. हाँ, मुझे लगता है कि यह पर्याप्त है। मुझे लगता है यह अच्छा है.

हाँ। और हम उसे देखेंगे. मुझे लगता है कि इसे इतना परिभाषित नहीं किया जा सकता.

इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक अच्छी परिभाषा है। हाँ। तो, हमारे पास यह है, यह मेरे आलोचनात्मक मूल्यांकन में है कि क्रॉनिकल ने हमें बताया कि तीन प्रकार थे।

और संक्षेप में, गुंकेल ने हमें तीन बार दिया था। उससे एक श्रेणी छूट रही है और वह है निर्देशात्मक स्तोत्र। और यह क्रॉनिकल में भी बहुत कुछ नहीं है, क्योंकि निर्देशात्मक भजन भजन 1 की तरह हैं। यह न तो याचिका है, न ही यह प्रशंसा है।

यह निर्देश है जो आपको स्तोत्र में ले जा रहा है और ऐसा डेविड द्वारा नहीं कहा गया है। इसलिए, मुझे खेद है, तीन प्रकारों की पुष्टि अनुभवजन्य रूप से की गई है। मेरा मानना है कि व्यापक शाही व्याख्या को पहचानने में विफलता के कारण व्यक्ति और समुदाय के बीच का अंतर कुछ हद तक त्रुटिपूर्ण है।

यानि व्यक्ति ही राजा है और हम जनता है . मेरा तर्क है कि शाही कोई विशिष्ट प्रकार नहीं है। यह कोई रूप नहीं, बल्कि एक विषय है.

इसके अंतर्गत छोटे-छोटे प्रकार आते हैं। वहाँ सिथ्योन के गीत होंगे। यह प्रशंसा का दूसरा रूप है.

मैं कहूँगा कि यह एक विशिष्ट प्रकार है। और जब वे बन्धुवाई में चले गए, तो बेबीलोनियों ने उन्हें सताया और कहा, हमारे लिए सिथ्योन के गीतों में से एक गाओ, जिससे पता चलता है कि वे समझते थे कि यह एक विशिष्ट प्रकार का भजन है। दरअसल, सिथ्योन के अलग-अलग भजन हैं।

इस व्याख्यान के अंत में, मैं उनका उल्लेख करता हूँ। इसमें यह पहचानने के लिए महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक, व्याख्यात्मक और साहित्यिक मूल्य हो सकते हैं कि आपके पास विभिन्न प्रकार का साहित्य है। यह आपके शब्दों की व्याख्या करने और शब्दों को समझने के तरीके को प्रभावित कर सकता है।

उदाहरण के लिए, सोशल पेज पर बॉल, खेल पेज पर बॉल से बिल्कुल अलग शब्द है। फिर यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सा खेल है, बॉल शब्द का क्या अर्थ है, फुटबॉल, बेसबॉल, बास्केटबॉल इत्यादि। तो वही बात सच है.

पेटी शब्द , जिसका अक्सर सरल अनुवाद किया जाता है, इसका मूल अर्थ खुला होना है। नीतिवचन की किताब में, वे मूर्खों का हिस्सा हैं क्योंकि वे खुले हैं, उन्होंने कभी कोई प्रतिबद्धता नहीं जताई है। तो यह नकारात्मक है.

स्तोत्र की पुस्तक में, पेटी धर्मी लोगों का वर्णन है क्योंकि वे भगवान के लिए खुले हैं। नीतिवचन की किताब और भजन की किताब में एक ही शब्द का बहुत अलग-अलग अर्थ है। इसलिए, यदि आप शब्दों का अध्ययन करना चाहते हैं, तो आपको इस बात के प्रति सचेत रहना होगा कि आप किस प्रकार के साहित्य से निपट रहे हैं।

आप बस एक सामंजस्य के माध्यम से नहीं जा सकते हैं और इन सभी अलग-अलग अर्थों को ढूँढ सकते हैं क्योंकि वे बिंदु-दर-बिंदु भिन्न होते हैं। यह न केवल रूप के लिए मूल्यवान है। जिस तरह से हम कविता या सर्वनाशी साहित्य की व्याख्या करते हैं, उसके लिए भी यह मूल्यवान है।

आप सारा साहित्य ऐसे नहीं पढ़ सकते जैसे कि वह गद्य और शाब्दिक हो। इसलिए यह समझना उपयोगी है कि आपके पास विभिन्न प्रकार का साहित्य है और वह सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, यह आमतौर पर कहा जाता है कि डेविड ने, भजन 51 में, बलिदान प्रणाली को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उसने कहा, उसने कहा, बलिदान।

खैर, चलिए इसे मेरी बाइबिल पर ले आते हैं। इसके अंत में भजन 51. ओह धन्यवाद।

सही। यह एक शोक स्तोत्र है। इसमें विलाप स्तोत्र के सभी चिह्न हैं और वह कहाँ है, हम विलाप स्तोत्र में कहाँ हैं, भजन 51 में, हम स्तुति अनुभाग में हैं।

हम भजन 51 को देखेंगे, लेकिन अब यह प्रशंसा है। इसकी शुरुआत 14 से होती है। हे परमेश्वर, मुझे बचाने वाले परमेश्वर, मुझे खून के अपराध से बचा।

और मेरी जीभ तेरे धर्म का गीत गाएगी, कि तू ने ठीक व्यवस्था स्थापित की है। हे प्रभु, मेरे होंठ खोलो और मेरा मुँह तेरी स्तुति का वर्णन करेगा। यह रहा।

तुम बलि से प्रसन्न नहीं होते, नहीं तो मैं ले आता। तुम होमबलि से प्रसन्न नहीं होते। परमेश्वर के बलिदान टूटी हुई आत्मा हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि वह बलि प्रथा को अस्वीकार कर रहा है, लेकिन यह संपूर्ण भजन है और इसके अलग-अलग उद्देश्य हैं। हम प्रशंसा अनुभाग में हैं। वह किस बारे में बात कर रहा है, मैं किसी जानवर की बलि नहीं देने जा रहा हूँ।

हम यहां आपकी माफ़ी का जश्न मना रहे हैं और उसने एक आदमी की हत्या कर दी है। एक गर्भवती पत्नी है। यह किसी बड़े उत्सव का समय नहीं है।

हम टूटी हुई आत्मा से भोजन कर सकते हैं, लेकिन डेविड को यह उचित लगा कि भगवान एक बड़ा भोजन नहीं चाहेंगे, हर कोई खा रहा हो, जश्न मना रहा हो। उन्होंने कहा, हम अपनी टूटी हुई आत्मा से भोजन पा सकते हैं। वह थोक में अस्वीकार नहीं कर रहा है।

वह कह रहा है, अभी यह उचित नहीं है। मैं वह आज नहीं लाऊंगा। आप एक जानवर नहीं चाहते हैं, जो आम तौर पर टोटा में जाता है, थैक्सगिविंग में हमेशा शब्द और पशु बलि शामिल होती है।

उन्होंने शब्द के बारे में बात की है. मैं तुम्हारी धार्मिकता की घोषणा करूंगा. उसने शब्दों में परमेश्वर की स्तुति की, परन्तु उसने कहा, मैं किसी जानवर की बलि नहीं चढ़ाऊंगा।

लेकिन उसने इसे अस्वीकार नहीं किया है क्योंकि भजन के अंत में, उसे माफ कर दिए जाने के बाद और आने वाले समय में, श्लोक 19 में, आपको प्रसन्न करने के लिए धार्मिक बलिदान, संपूर्ण होमबलि होंगे। तब तुम्हारी वेदी पर कटोरे चढ़ाए जाएंगे। वह बलि प्रथा को अस्वीकार नहीं कर रहा है.

वह बस इतना ही कह रहा है कि यह आपकी प्रशंसा की मेरी गवाही का हिस्सा नहीं हो सकता। यह अनुचित है। यह मेरे लिए समझ में आता है, लेकिन इसमें से यह सब हटा दिया गया है।

अकादमिक साहित्य में इसे संदर्भ से बाहर ले जाना सामान्य बात है। वे कहते हैं, डेविड, यह इस वेदी के उन्नत धर्मशास्त्र का हिस्सा है। यह बलि प्रथा को अस्वीकार करता है।

यह बहुत सरल है. प्रिय आपको धन्यवाद। तो मैं पृष्ठ 54 पर हूं और मैं कह रहा हूं कि इसमें व्याख्यात्मक, व्याख्यात्मक, साहित्यिक मूल्य हैं।

मैंने कहा कि इससे हमें शब्द अध्ययन में मदद मिलती है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि यह गद्य है या पद्य या प्रतीकात्मक है या शाब्दिक। यह व्याख्या करना भी सहायक है कि अलग-अलग रूपांकन हैं।

जब हम इन रूपांकनों में प्रवेश करते हैं, तो यह आलोचना के परिचय का एक हिस्सा है, लेकिन हमने बहुत सारी बातें कवर कर ली हैं। मेरा मतलब है, हमें साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की पूरी पृष्ठभूमि मिल गई है। मुझे आशा है कि आपको इस संदर्भ का कुछ अंदाजा होगा कि आलोचना किस रूप में उभर रही है और यह ऐसा आकार क्यों लेती है।

अब हम भाग दो पर आते हैं। हम अपने आप को भजनों की प्रशंसा तक ही सीमित रखेंगे। मूलतः ये दो प्रकार के होते हैं.

सृष्टि और मुक्ति के इतिहास में सामान्यतः ईश्वर की स्तुति है। और फिर प्रार्थना के विशिष्ट उत्तरों के लिए धन्यवाद, आभारी प्रशंसा होती है। मैं यहां वेस्टरमैन और भजनों में उनकी स्तुति और विलाप का अनुसरण करने का सुझाव दे रहा हूं।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा शब्द था. उनका तर्क है कि धन्यवाद के लिए कोई शब्द नहीं है या मूल रूप से जर्मन और अंग्रेजी में धन्यवाद के लिए कोई शब्द नहीं है। मुझे याद है कि मैंने एक शोध प्रबंध पढ़ा था जिसमें यह मामला बनाया गया था।

पुराने नियम में कोई धन्यवाद ज्ञापन नहीं है। मैंने सोचा कि यह जंगली है. उसका मतलब यह था कि पुराने नियम में, आपने कभी भगवान से नहीं कहा, धन्यवाद।

आपने कुछ अलग किया. आपने धन्यवाद देने के लिए शब्द का अर्थ अंगीकार करना बनाया। यह पाप स्वीकार करना हो सकता है, लेकिन यह स्वीकार करना भी है कि भगवान, आपने मेरे लिए यह किया।

तो, यह सार्वजनिक प्रशंसा है, सार्वजनिक स्वीकारोक्ति है। आप हर किसी को बता रहे हैं कि उसने आपके लिए जो किया उसके लिए आप भगवान की स्तुति कर रहे हैं। जब मैं एक बच्चे के रूप में अपने चर्च में बड़ा हुआ, तो हमने बुधवार की रात को प्रार्थना और गवाही दी।

हम घंटे की शुरुआत प्रार्थना से करते हैं और घंटे का अंत स्तुति में करते हैं। हम एक-दूसरे को बताएंगे कि भगवान हमारे जीवन में क्या कर रहे हैं। हम एक दूसरे के लिए स्तोत्र, भजन और आध्यात्मिक गीत गा रहे थे।

मुझे लगता है कि यह सब इसी बारे में है। तो, आपके पास है, तो ऐसा नहीं है, हम भगवान से नहीं कहते हैं, धन्यवाद। हम हर किसी को बताते हैं कि भगवान मेरे जीवन में क्या कर रहा है।

और आजकल हमारे पास वह है. भगवान आपके जीवन में क्या कर रहा है? हम एक दूसरे के साथ साझा करते हैं कि वर्तमान समय में भगवान हमारे जीवन में क्या कर रहे हैं। हम सभी एक दूसरे के साथ विकास की प्रक्रिया में हैं।

भजन अब इसका अगला भाग हैं. दोनों प्रकार के बाद मैं भजन की बात करता हूँ। फिर पृष्ठ 72 पर, मुझे रोमन अंक तीन में पृष्ठ 72 तक कृतज्ञ प्रशंसा के गीत नहीं मिलेंगे, कृतज्ञ प्रशंसा के गीत।

उनमें से 15 हैं. ठीक है। चलिए शुरू करते हैं फिर वापस चलते हैं।

ये इस व्याख्यान के तीन भाग हैं. ये दो प्रकार के होते हैं. इसलिए, मैं भजन के बारे में बात करता हूँ और मैं आभारी प्रशंसा के गीतों के बारे में बात करता हूँ।

इस सामग्री का बड़ा हिस्सा भजन और भजन के विश्लेषण पर है। सबसे पहले, मैं भजन के रूपांकनों के बारे में बात करता हूँ। इसके तत्व क्या हैं? यह कैसे संरचित है? मैं इससे थोड़ा असहज हूँ क्योंकि मुझे थोड़ा-सा वनस्पतिशास्त्री जैसा महसूस हो रहा है कि मैं एक फूल को तोड़ रहा हूँ।

जब आप सब समाप्त कर लेंगे, तो आपके पास कोई फूल नहीं रहेगा। और मैं जो कर रहा हूँ वह यह है कि मैं भजनों की धज्जियां उड़ा रहा हूँ। और जब मेरा काम पूरा हो जाएगा, तो हम भजन की सुंदरता और सुगंध के बिना ही समाप्त हो सकते हैं।

लेकिन मैं यह भी कह रहा हूँ कि उस वनस्पतिशास्त्री के लिए भी मूल्य है जो तने और पत्तियों और जड़ों का विश्लेषण करता है और यह सब क्या है। और हम यहां यही कर रहे हैं। हम वास्तव में यह देखने के लिए फूल को तोड़ रहे हैं कि इसकी रचना कैसी है।

लेकिन फिर अंत में, हमें इसे फिर से एक साथ रखना होगा ताकि हम इसे सूँघ सकें और इसका आनंद ले सकें। तो अभी मैं एक वनस्पतिशास्त्री के विश्लेषण चरण में हूँ। मैं हमेशा वैज्ञानिक रूप से बेहतर करता हूँ।

मैं संगीत सुनने से बेहतर संगीत का विश्लेषण करता हूँ, लेकिन मैं संगीत का आनंद लेता हूँ। मैं आमतौर पर बहुत अधिक टॉनिक हूँ। ठीक है।

तो, मैं रूपांकनों के बारे में बात कर रहा हूँ। फिर अगली चीज़ जिसके बारे में मैं बात करूँगा वह है प्रदर्शन। यह चालू रहेगा, वह कहां है? नहीं, जो हुआ वह पृष्ठ 64 पर है और प्रदर्शन, मैं कहता हूँ, धार्मिक दृष्टिकोण देखें।

इसलिए मुझे यह याद नहीं रहा। ठीक है। तो मैं बात करने जा रहा हूँ, पृष्ठ 55 पर वापस जा रहा हूँ।

तो, हम देख सकते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं। और खो मत जाओ। मैं सबसे पहले, रूपांकनों के बारे में बात कर रहा हूँ।

फिर मैं प्रदर्शन के बारे में बात कर रहा हूँ। और फिर मैं धर्मशास्त्र के बारे में बात करने जा रहा हूँ। आखिर वे किस बात का जश्न मना रहे हैं? और यही वास्तव में मामले का मूल है।

तो, हम धर्मशास्त्र के बारे में बात करना चाहते हैं। वह पृष्ठ 64 पर है। और फिर मेरी रूपरेखा गलत हो गई।

मुझे इस बिंदु पर एहसास हुआ, और यह मेरे लिए बहुत असामान्य नहीं है। और पृष्ठ 71 पर, हम देखने जा रहे हैं, मैं बस सिंघोन के गीतों का उल्लेख करने जा रहा हूँ। और वहां आपको सिंघोन के सभी गाने मिलेंगे और वह डी होना चाहिए। तो ए रूपांकन है, बी प्रदर्शन है, सी धर्मशास्त्र है, डी सिंघोन के गीत हैं।

और फिर अंत में, आखिरी वाला, जो ई होना चाहिए, लेकिन एफ यहां पृष्ठ 72 सिंहासनारोहण स्तोत्र में है। ठीक है। तो यह उसकी रूपरेखा है कि हम भजनों के साथ क्या कर रहे हैं।

हम उनके रूपांकनों के बारे में बात करने जा रहे हैं। हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि उनका प्रदर्शन किसने किया। हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि वे क्या मनाते हैं? उनका धर्मशास्त्र क्या है? और फिर हम संक्षेप में दो छोटे प्रकार की स्तुति, सिंघोन के गीत और सिंहासन भजन का उल्लेख करेंगे, जहां वे भगवान को राजा के रूप में मनाते हैं।

ठीक है। हम साथ हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं या हम अभी भी खोये हुए हैं? ठीक है। आइए रूपांकनों, तत्वों से शुरू करें।

यह बहुत सरल है। इसके तीन भाग हैं, स्तुति का आह्वान और मुख्य भाग स्तुति का कारण है। यहीं से हमें धर्मशास्त्र मिलता है।

और फिर हमारे पास एक निष्कर्ष है, प्रशंसा के लिए एक नए सिरे से आह्वान। तो, आप देख सकते हैं कि हमारे पास पृष्ठ 56 के शीर्ष पर है, हमारे पास अक्सर यह निष्कर्ष है कि यह प्रशंसा के लिए एक नए सिरे से कॉल है। सबसे छोटा भजन 117 लीजिए।

यह केवल दो छंद हैं, लेकिन वहां आपके पास सभी तीन तत्व हैं। प्रभु की स्तुति करो, स्तुति का आह्वान करो, तुम्हारे सभी राष्ट्रों का प्रदर्शन, उसकी स्तुति करो, अपने सभी लोगों के लिए। क्यों? यहाँ कारण है, शरीर।

क्योंकि उसका प्रेम हमारे प्रति महान है, और प्रभु की विश्वासयोग्यता सर्वदा बनी रहती है। यही इसका सार है। और फिर प्रभु की स्तुति, स्तुति करने के लिए नए सिरे से आह्वान आता है।

बहुत सरल। वह संपूर्ण भजन है। इसमें तीनों रूपांकन हैं।

मुझे इससे छोटा कोई नहीं मिला जहां आप इसे देख सकें। अब यह सरल लग सकता है। यह निश्चित रूप से है, लेकिन इस पर विचार करना उचित है।

और हम इस पर विचार करेंगे। अब भजन 33, मुझे लगा कि यह बहुत छोटा है। तो, मैंने भजन 33 का पूरा अंश दे दिया है और यहां आपको संपूर्ण पाठ मिलता है।

और हमारा समय कम है। मैंने इसे यहां इसलिए रखा है क्योंकि इस पाठ्यक्रम में खतरा यह है कि आप स्वयं भजन में नहीं पड़ेंगे। आपको यह सब विश्लेषण मिलता है और मुझे भजन सुनना पसंद है।

तो चलिए इसे पढ़ते हैं। हे धर्मियों, यहोवा के लिये आनन्द से गाओ! सीधे लोगों के लिये उसकी स्तुति करना उचित है।

वीणा बजाकर यहोवा की स्तुति करो, इस दस तारवाली वीणा पर उसका भजन गाओ। उसके लिए एक नया गाना गाओ। इससे उनका क्या तात्पर्य है, पुराना गीत निर्गमन 15 के सागर का गीत है, निर्गमन का।

तो वे कह रहे हैं कि कोई नया गाना गाओ। उसने निर्गमन से भी अधिक कार्य किया है। वह लगातार हमारे जीवन में काम कर रहा है।

तो वे कह रहे हैं, एक्सोडस गीत के बगल में एक नया गाना गाओ जैसा कि मैं इसे समझता हूं। कुशलता से खेलें और खुशी से चिल्लाएं। अब इसका कारण, प्रभु का वचन सही है।

और यह सच है। वह अपने हर काम में वफादार है। प्रभु को धर्म और न्याय प्रिय है।

पृथ्वी उसके अटल प्रेम से भरी हुई है। अब वह इस शब्द पर वापस जाता है कि आप इस पर निर्भर रह सकते हैं। प्रभु के वचन से स्वर्ग बना, और उसके मुंह की सांस से तारों का समूह बना।

वह समुद्र का जल घड़ों में इकट्ठा करता है। वह गहिरे धन को भंडारगृहों में रखता है। ध्यान दें कविता, कल्पना और आलंकारिक भाषा कविता का हिस्सा हैं।

सारी पृथ्वी यहोवा का भय माने। संसार के सभी लोग उसका आदर करें। क्योंकि उसने कहा और ऐसा हो गया।

उसने आज्ञा दी और वह दृढ़ रहा। अब वह इतिहास में ईश्वर के न्याय की बात करते हैं। यहोवा राष्ट्रों की योजनाओं को विफल कर देता है।

वह लोगों की युक्तियों को विफल कर देता है, परन्तु यहोवा की युक्तियाँ सर्वदा स्थिर रहती हैं। पीढ़ी पीढ़ी तक मन का प्रयोजन धन्य है वह जाति, जिसका परमेश्वर यहोवा है, और जिस प्रजा ने उसके निवासियोंके लिखे चुन लिया है। स्वर्ग से, प्रभु नीचे देखते हैं और समस्त मानवजाति को देखते हैं।

अपने निवास स्थान से, वह पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों पर नज़र रखता है। वह जो सबके दिलों का निर्माण करता है, जो उनके हर काम पर विचार करता है। किसी भी राजा को उसकी सेना के आकार से बचाया नहीं जा सकता।

कोई भी योद्धा अपनी महान शक्ति से बच नहीं पाता। अदन के घोड़े अपनी तमाम ताकत के बावजूद मुक्ति की आशा रखते हैं। वे बचा नहीं सकते, परन्तु यहोवा की दृष्टि उन पर बनी रहती है जो उस से डरते हैं, और जो उसके अटल प्रेम की आशा रखते हैं कि वह उन्हें मृत्यु से बचाएगा, और अकाल में जीवित रखेगा।

हम प्रभु की आशा में प्रतीक्षा करते हैं। वह हमारी सहायता और हमारी ढाल है। उसमें हमारे हृदय आनन्दित होते हैं क्योंकि हमें उसके पवित्र नाम पर भरोसा है।

हे प्रभु, आपका अटल प्रेम हमारे साथ बना रहे, भले ही हम आप पर अपनी आशा रखते हों।" खैर, यह एक विशिष्ट स्तुति स्तोत्र है। यह अद्भुत है और इसके बारे में हमारे कमजोर विश्लेषण और इसे खंडित करने से कहीं बेहतर है। लेकिन चलिए वापस चलते हैं।

अब हम पहले भाग के अंतर्गत जा रहे हैं, जो प्रशंसा का आह्वान है। यह नंबर एक है। अब हम इससे पूरी तरह निपटेंगे।

यह पृष्ठ 57 पर है। परिचय प्रशंसा का आह्वान है। यहां मैं गुंकल के साथ कई टिप्पणियाँ करने जा रहा हूँ।

सबसे पहले, हमें यह ध्यान देना चाहिए कि यह एक अनिवार्य मनोदशा है। यह प्रभु की स्तुति करने का आदेश है। और हम उस बारे में बात करेंगे।

पृष्ठ 59 पर, हम देखते हैं कि मनोदशा उत्साहपूर्ण है। यह गुणगुना नहीं है। भगवान को गुणगुनापन पसंद नहीं है।

यह उसके लिए गुणगुनी कॉफी की तरह है और वह इसे अपने मुंह से बाहर निकाल देता है। वह उत्साह चाहता है। वह उत्साह चाहता है, औपचारिकता नहीं, जो मुझे वहां मिलता है।

सी के तहत, मैं चर्चा करता हूं कि इसे कौन निष्पादित करता है। इन स्तोत्रों का गायन कौन करता है? और मैं उसका विश्लेषण करता हूं। मुझे लगता है कि यह हमें उन तीन चीजों के बारे में बताता है जिनके बारे में मैं परिचय के माध्यम से चर्चा करने जा रहा हूं, अनिवार्य मनोदशा, उत्साह की मनोदशा, और इसे कौन गाता है, कौन इसे निष्पादित करता है।

ठीक है। सबसे पहले, अनिवार्य मनोदशा विशिष्ट जर्मन है। हर चीज़ का विश्लेषण होता है।

वह इसे प्राप्त करता है, दूसरे व्यक्ति में क्या है, आप, लोगों के न्याय के रूप में क्या जाना जाता है, और फिर हमें एक समूह के रूप में क्या जाना जाता है। तो वह आपको ऐसा करते हुए देखता है। दूसरे लोग ऐसा करें और मैं यह करने जा रहा हूं।'

और वह हर चीज़ का विश्लेषण करता है। और यह सब उनके परिचय में प्रलेखित है। यह अद्भुत कृति है।

उसके पास कंप्यूटर नहीं है। न ही आप ऐसा कंप्यूटर के साथ कर सकते हैं। मैं नहीं जानता कि आप ऐसा कर सकते हैं, लेकिन फिर भी, वह संपूर्ण है।

तो आप वास्तव में, जब आप परिचय पढ़ते हैं, तो आप वास्तव में समझते हैं कि भजन में क्या है, लेकिन आप आत्मा को याद करते हैं। वह इसका विश्लेषण करता है, लेकिन वह स्वयं, मुझे कोई उत्साह या विश्वास महसूस नहीं होता है। यह आश्चर्यजनक है।

लेकिन उस परिचय को देखते हुए जहां हमें भगवान की स्तुति करने के लिए बुलाया गया है, यह परेशान करने वाला है। कम से कम यह सीएस लुईस के लिए था। और यदि आप इसके बारे में सोचें, तो क्या ईश्वर आत्ममुग्ध है? क्या वह असुरक्षित है? क्या उसे हमें यह बताना होगा कि आप कितने महान हैं? मैं तुमसे कभी नहीं कहूंगा कि तुम मेरी प्रशंसा करो।

मेरे साथ कुछ गड़बड़ होगी। आप नीचे देखेंगे और ठीक भी है। आप इससे क्या बनाते हैं? यह एक ईमानदार सवाल है।

परमेश्वर तुमसे कह रहा है, मेरी स्तुति करो। और इससे लुईस को ठेस पहुंची और मैं इसे समझ सकता हूं। तो वह इसी से जूझ रहा है।

इसके लिए एक ईमानदार प्रश्न की आवश्यकता है। परमेश्वर मुझसे उसकी स्तुति करने के लिए कैसे कह सकता है? क्या यह आत्ममुग्ध, आत्मकेन्द्रित, आत्ममुग्ध नहीं है? तो, यह विशिष्ट सीएस लुईस है। वह इस पर विचार करने जा रहे हैं।

वह सोचने वाला है, अच्छा, अब हम किसकी प्रशंसा करें? और वह एक कलाकृति लेने जा रहा है और हम एक कलाकृति की प्रशंसा करते हैं। और वह दिखाता है कि कला के टुकड़े की प्रशंसा करना पूरी तरह से उचित क्यों है। और इसकी तारीफ न करना बिल्कुल गलत होगा।

और यदि वह कला के एक टुकड़े की प्रशंसा कर सकता है, और ऐसा करना सही बात है, तो क्या कला के टुकड़े से कहीं बड़े किसी व्यक्ति के लिए ऐसा करना सही बात नहीं है? यही करना सही बात है। जैसा कि भजनकार कहता है, यह हमारी धर्मविधि में सही और उचित है, हमारे छोटे एंग्लिकन चर्च में, हर रविवार को हम कहते हैं, प्रभु की स्तुति करना सही और उचित है। और यह सही और उपयुक्त है।

लुईस इसी से जूझ रहा है। वैसे, उन्हें एंग्लिकन चर्च में कैनन बनाया गया था। एंग्लिकन चर्च में अब पूरा रविवार सीएस लुईस को समर्पित है।

खैर, मुझे लुईस को उनके अपने शब्दों में पढ़ने दीजिए। जब हम कहते हैं कि कोई चित्र सराहनीय है तो हमारा क्या मतलब है? जिस अर्थ में चित्र, हमारा तात्पर्य है, वह अर्थ जिसमें चित्र प्रशंसा का पात्र है या मांग करता है, वह प्रशंसा उसके प्रति सही, पर्याप्त या उचित प्रतिक्रिया है। यदि प्रशंसा की गई तो उसे व्यर्थ नहीं जाने दिया जाएगा।

और यदि हम प्रशंसा नहीं करते हैं, तो हम मूर्ख, असंवेदनशील और महान हारे हुए होंगे। यदि आप किसी ऐसी चीज़ की प्रशंसा नहीं करते जो वास्तव में सराहनीय है, तो आप हारे हुए हैं। और आप वास्तव में उस सारी सुंदरता में पूरी तरह से भाग नहीं ले रहे हैं जो आपकी हो सकती है।

तो अब वह इसे ईश्वर को सौंप देता है, पृष्ठ 58। फिर लुईस कला और प्रकृति में वस्तुओं की प्रशंसा करने की मांग से ईश्वर की स्तुति करने की मांग की ओर बढ़ता है। वह प्रशंसा करने योग्य वस्तु है, यदि आप चाहें तो इसकी सराहना कर सकते हैं, जिसका अर्थ है केवल जागना, वास्तविक दुनिया में प्रवेश करना।

सराहना न करना, सबसे बड़ा अनुभव खोना है। और अंत में, वह सब खोना जो आपने वास्तव में नहीं जिया। उन लोगों का अधूरा और अपंग जीवन जो सुर बधिर हैं, जिन्होंने कभी प्यार नहीं किया, कभी सच्ची दोस्ती नहीं देखी, कभी किताब की परवाह नहीं की, गालों पर सुबह की हवा का एहसास नहीं किया या किसी ऐसे व्यक्ति की धुंधली छवि का आनंद नहीं लिया जिसने कभी प्यार नहीं किया परमेश्वर के आश्चर्य का अनुभव किया और उसकी स्तुति और प्रशंसा कर सका।

मुझे लगता है कि लुईस की ओर से यह बहुत अच्छा है और यह हमारी भलाई के लिए भी है। वह हमें बुलाता है। यह सही है।

यह उपयुक्त है। यह सराहनीय है। मैं हॉलीवुड सितारों, व्यभिचारियों, व्यभिचारियों को भी नहीं जानता।

वे वे लोग नहीं हैं जिनके बारे में मैं बात करता हूँ। वे वे लोग नहीं हैं जिनकी मैं प्रशंसा करता हूँ। वे वही हैं जिनसे मैं वास्तव में पहचान नहीं रखता।

मैं भगवान की प्रशंसा करता हूँ। मैं उसके बारे में दुनिया से बात करता हूँ। यह उबाऊ है, लेकिन संत के लिए यह हमारे जीवन का आनंद है।

इसलिए अनिवार्यता के इन विवरणों पर विचार करना सार्थक है। और मैं यहां भजन 95 से जोड़ता हूँ, हमें सभी परिस्थितियों में उसकी प्रशंसा करनी है। आप वह देख सकते थे।

आओ, हम प्रभु के लिए आनन्द से गाएँ। आइए हम अपने उद्धार की चट्टान पर ऊंचे स्वर से जयजयकार करें। आइए हम धन्यवाद के साथ उसके सामने आएँ और गीत-संगीत के साथ उसकी स्तुति करें।

क्योंकि प्रभु एक महान ईश्वर, सभी देवताओं से ऊपर महान राजा है। पृथ्वी की गहराइयां उसके हाथ में हैं और पर्वत शिखर भी उसी के हैं। समुद्र उसका है क्योंकि उसने उसे बनाया है और उसके हाथों से सूखी भूमि बनी है।

आइए, हम प्रणाम करें और वंदन करें। आइए हम अपने निर्माता यहोवा के सामने घुटने टेकें क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है और हम उसकी चरागाह के लोग हैं, उसकी देखभाल के अधीन झुंड हैं। लेकिन आज, यदि आप केवल उसकी आवाज सुनेंगे और खतरा यह है कि वे संघर्ष में हैं।

वे खतरे में हैं। यह ऐसा है जैसे वे मस्सा के मरीबा में हैं और उन्हें ईश्वर पर संदेह करने का खतरा है। अपने मन को कठोर न करो जैसा तुम ने मरीबा में किया था, जैसा तुम ने मस्सा के दिनों में जंगल में किया था, जहां तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा था।

उन्होंने मुझे आजमाया, हालाँकि उन्होंने देखा था कि मैंने क्या किया। 40 साल तक मैं उस पीढ़ी से नाराज रहा। मैंने कहा, ऐसे लोग भी होते हैं जिनके दिल भटक जाते हैं।

वे मेरी चाल नहीं जानते। इसलिये मैं ने क्रोध में आकर शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में कभी प्रवेश न करेंगे। दूसरे शब्दों में, मुझे ऐसा लगता है कि वे मेरिबा या मस्सा या कठिनाई के स्थान पर हैं।

उन्हें शिकायत और कड़वाहट तथा प्रभु की स्तुति न करने का खतरा है। अपने हृदय कठोर मत करो। तो अब प्रशंसा का आह्वान नया अर्थ लेता है।

इसीलिए मैं भजन 95 को समझता हूँ, हम हर समय, हर परिस्थिति में उसकी स्तुति करते हैं। यह शिक्षाप्रद है। और इसलिए भजन 22 में, जब वह कहता है, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? यह भजन 22 के संदर्भ में है, सभा में, मैं आपकी प्रशंसा करूंगा, इत्यादि।

जैसा कि मैंने कहा, बिना प्रशंसा के आपको कभी शोक नहीं होता। और हमें स्तुति करने का आदेश दिया गया है। यह वैकल्पिक नहीं है।

यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम मर चुके हैं। और मुझे लगता है कि प्रशंसा के इन भजनों का परिचय समाप्त करने के लिए यह एक अच्छी जगह है। यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं।

यह सत्र संख्या छह है, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और भजन रूपांकनों पर।